...सर्विस होती है तो यहाँ बच्चे सुनेंगे, तो भी उनको उस सर्विस की भी कुछ धारणा होंगी कि क्या–2 समझाते हैं, क्या–2 कहाँ; क्योंकि बच्चे ही सिर्फ समझते हैं कि ये ज्ञान है बिल्कुल नया और दुनिया में तो ये ज्ञान है ही नहीं। जैसे कोई भाषा होती है–जपानी और देशी। तो देशी होगा तो जपानी भाषा समझ सकेगा? नहीं। तैसे ये भी जो ज्ञान है, सारी दुनिया में कोई के भी पास नहीं है। सिर्फ तुम बच्चों के पास समझाय रहे हैं और फिर तुम बच्चे औरों को समझाते हो। बाकी दुनिया, दुनिया तो भक्ति में है ना बच्चे। तो जब तलक भक्ति वालों को भगवान न आ करके ज्ञान समझावे तब भक्तों को भगवान से फल कैसे मिलें; क्योंकि भक्तों को बाप से फल मिलना है। तो भक्तों को बाप से फल क्या चीज़ का मिलना है? सुख का; क्योंकि भगत दुःखी होते हैं। भगत पुकारते हैं कि आ करके दुःख हरो। तो ज़रूर भक्ति में दुःख है। तो दुःख को ही फिर दुर्गति भी कहा जाता है। इसलिए इन चित्रों में भी सब क्लीयर करके लिखते हैं कि भक्ति अर्थात् दुर्गति शुरू। रावण राज्य और पतित प्रवृत्ति मार्ग, साथ–2 ये भक्ति दुर्गति शुरू, रावण राज्य शुरू। तो सब कुछ लिखना और समझाना पड़ता है। अभी समझाने का बहुत रहता है। उसमें इतना समझाना है युक्ति से जो वो समझ जाए कि 84 जन्म से हम तमोप्रधान (...)। भगवान है पतित–पावन। वो एक 84 जन्म का चक्कर सुनाय (और) समझाय रहे हैं। कि 84 जन्मों का चक्कर कैसे फिरता है, समझाय रहे हैं। कौन समझाय रहे हैं? उससे समझाते हैं, ऊपर में लिखा हुआ है, लाइन में लिखा है ना बच्चे कि वो गीता का भगवान, ज्ञान सागर, पतित–पावन, ये 84 का चक्कर समझाय रहे हैं। बाप का नाम। समझाने के समय में फिर सब कुछ समझाना पड़ता है कि अभी चक्र पूरा हुआ, सतोप्रधान से तमोप्रधान। अभी फिर सतो, तमोप्रधान से सतोप्रधान (...)। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। अपन को आत्मा निश्चय करो। देह के ये सभी सम्बंध छोड़ो। देहअभिमान के सभी जो बंधन हैं वो तोड़ो और मुझे याद करो, तो तुम पावन बन करके (फिर) नई पावन विश्व के मालिक बन जाएँगे। तो वो समझे कि यहाँ अभी ये शिक्षा मिल रही है; क्योंकि ये तो बच्चे भी समझते हैं, बाप भी समझते हैं कि उन कौरवों की एक्टीविटी अलग है, तुम्हारी अलग है बिल्कुल। तुम्हारी एक्टीविटी को सिर्फ वही आकर समझेगा जिन्होंने कल्प पहले समझी है। ऐसे नहीं है कि कोई गवर्मेंट बैठ करके समझेगी इस ज्ञान को। ऐसे कायदा नहीं है। काँग्रेस गवर्मेंट बैठ करके समझे, ये नहीं। बाकी जो भी बच्चे हैं, हैं तो सभी इस समय में जैसे कि काँग्रेस राज्य चल रहा है; परन्तु वो तो बिज़ी रहेंगे ना बच्चे अपने सम्भाल के लिए। कि उनके ऊपर ये भी तो मुसीबत है ना और तुम बच्चों के ऊपर तो कोई मुसीबत की बात ही नहीं है। उनके ऊपर तो अपनी राजधानी की देख–रेख करनी है, सम्भाल करनी है, ये करना है, वो करना है और तुम्हारी चलन बिल्कुल न्यारी सबसे। तो सब युक्ति से इन चित्रों में समझाना होता है। कोई 1,2,3 चित्र ऐसे (...) जो आपे ही भी ऐसी युक्ति से लिखना है, जो युक्ति से वो लोग समझ जावे कि 84 जन्म के बाद फिर से रिपीट होती है। इसलिए कलहयुग से फिर सतयुग, पतित से पावन, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना पड़ेगा। इसलिए योगबल से, ये बल से विश्व पर जीत पहनी जाती है। तो बच्चे भी इसको अच्छी तरह से समझ जाएँगे। इस चक्र को भी सामने समझाओ उसके हिसाब से। इसके ऊपर भी लिख देते हैं– 600 करोड़। समझा ना बच्चे! ये तो बिल्कुल सहज है बड़े के ऊपर लिखना। ये प्रदर्शनी के

चित्र भी, अगर कहाँ बड़े हॉल जैसे लेते हैं या मिलते हैं, तो वो बड़े चित्रों बिगर छोटे शोभते नहीं हैं। अच्छी तरह से क्लीयर सब कोई समझें। तो इसलिए बड़े चित्र और ये चित्र (...)। अभी देखो, जयपुर में कोशिश कर रहे हैं। बाबा सैंक्शन (अनुमति) दे दिया है कि भले बड़े–ते–बड़ा एकदम वहाँ भी सेन्टर खोल दो। तो ऐसे बड़े–2 सेन्टर (...) और सदैव सेन्टर कायम रहें। फिर सबको, कोई–न–कोई एक/दो को लेकर आते रहेंगे दिखलाने लिए। जैसे कोई म्युज़ियम होता है, नया खुलता है ना बच्चे। कोई भी चीज़ नई खुलती है, अख़बार में तो पड़ ही जाता है। पीछे जब–2 जिसको फुर्सत होती है वो..जाते हैं वो चीज़ देखने के लिए। ये भी एक जैसे जयपुर में बड़ा म्युज़ियम खोल देंगे, हमेशा के लिए वहाँ। सेन्टर का सेन्टर, म्युज़ियम का म्युज़ियम, समझाने के लिए भी एक/दो रहेंगे ही वहाँ। पहले कहाँ भी बड़ा सेन्टर खोलना होता है बड़े गाँव में तो अच्छे–2 भेज देने पड़ेंगे। कोई–न–कोई सेन्टर पर से, 10/15 रोज़ कहाँ से, 10/15 रोज़ कहाँ से, जैसे अहमदाबाद को उठाया है। तो ऐसे; क्योंकि उठाने में समय बहुत लगता है। मनुष्य की बुद्धि में बैठे, ये बड़ी मेहनत है। ये मेहनत का काम है; क्योंकि सबकी कला ऊँची जानी है। मनुष्य तो जो कुछ भी समझाते हैं वो तो जैसे कि सबकी कला नीचे जाती है, उतरती कला के अर्थ। सबको जो समझाते हैं यहाँ, सब उतरती कला के लिए। तो एकदम चढ़ती कला, जीवनमुक्ति की कला। ये है जीवनबंध (की) कला, गिरते आते हैं। जो कुछ भी समझाते हैं, गिरते आते हैं। तो बच्चे भी बहुत होशियार (...)। अभी जो होशियार बनेगा और बाप के सर्विस में लगेगा, पद भी ऊँचा पाय सकेगा। (सम)झाने वाला जब समझ जाएँगे अच्छी तरह से, दूसरे को(की) भी समझानी देखते रहेंगे। फुर्सत होगी तो देखेंगे– ये कैसे समझाते हैं? देखें। तो सीखने का भी बड़ा है, जिनको शौक है। अभी जिनको शौक नहीं है सीखने–करने का या बाप से ऊँचा पद पाने का, उनकी तो बात ही क्या करनी है! समझाने का शौक बहुत चाहिए बच्चों को। देखो, ये बच्ची नई है, ये मेरठ की। इनको ये सीढ़ी के ऊपर (...)। ये अच्छा शौक से बैठ करके समझती है। घड़ी–2 बोलती है– ये भी लिखना चाहिए। बाबा, ये नहीं लिखा है, ये भी लिखना चाहिए। तो बाबा को तसिल्ला होती है कि इन बच्ची में शौक है समझने का, सीखने का। कोई सीखने के लिए सभी नहीं आते हैं। जब पब्लिक कर देते हैं तो बात मत पूछो, ऐसे डर्टी–2 आदमी अंदर आते हैं, बंदर से भी बदतर। बस, वो आते भी हैं कई–2, जो 'ब्रह्माकुमारियाँ' नाम पड़ा हुआ है ना बच्ची, तो 'कुमारियाँ' तो वो सुन करके, भले वो समझते हैं कि ये भी कुमारियाँ–ही–कुमारियाँ, जाकर कुमारियों का दीदार करें, दर्शन करें....। ऐसे कुमारियों की कॉलेजीस तो बहुत होती हैं, जिसमें कुमारियाँ ही पढ़ती हैं। पीछे कहाँ कॉलेज हैं, कुमारियाँ और कुमार इकट्ठे पढ़ते हैं; क्योंकि इस समय में इकट्ठे पढ़ने से ही तो ये सारा भ्रष्टाचार होता है बहुत; परन्तु है ही सारी गवर्मेंट भ्रष्टाचारी, तो फिर सभी स्कूल के छोकरें भी, छोकरियाँ भी, सभी भ्रष्टाचारियों के कतार में। कि दुनिया ही भ्रष्टाचारियों की है। पिछाड़ी तो बात मत पूछो। समझा ना! ये बड़े–2 अमीर, बड़े–2 राजाएँ..., आजकल एक्ट्रेसेज(अभिनेत्रियाँ) भी देखो कितनी निकलती हैं, कितनी वो श्रृंगार वगैरह करते हैं, तो कितने बड़े–2 आदमी उनके पिछाड़ी भी पड़ते हैं। गंद है मतलब तो। अच्छा, वो छूत–3 नहीं चाहिए और यहाँ अपने पास तो बड़ी भारी ये छूत है और कायदे के मुजीब हम कोई भी मनुष्य को हाथ नहीं लगाय सकते हैं; क्योंकि ये जो

हैं ना, इनके लगाने देते हैं, छूने देते हैं कुछ? हाथ नहीं छूने देंगे। दूर से ही नमस्कार करने देंगे, हाथ नहीं छूने देते हैं। कई वल्लभाचारियाँ हैं, कभी भी कोई भी होते हैं ना, भले खुद विकारी हैं, पर वैष्णव हैं ना, तो वो समझेगा कि ये वैष्णव नहीं, मांस–वांस खाने वाले होंगे, क्या होंगे! कभी हाथ नहीं लगाने देंगे पैरों को। तो ये तो समझते हैं ना बच्ची कि जिसको आधाकल्प छुआ, पूजा की, फलाना की और हम बैठ करके वो, बाप बैठ करके वो शिक्षा देते हैं। बाप ने कहा, आज चिट्ठी लिखी भी थी। ये बच्चे आते हैं यहाँ। भक्तिमार्ग में मिसाल देते हैं, जो भी बैठे हैं यहाँ, ये सब जो बैठे हैं, ये तो जानते हैं ना कि हम देवी–देवता थे। ठीक है ना बच्चे! अच्छा, फिर गिरे आए भक्तिमार्ग में। तो आधाकल्प फिर बाप से वर्सा लेने के लिए धक्का खाया है। इतना धक्का खाते–2 फिर किसको पता भी नहीं पड़ा है कि फिर बाप से वर्सा लेंगे कैसे? अच्छा, यहाँ बाप बैठा हुआ है और वो कहते हैं कि तुमको हमने इतना बनाया। तुमने कितना धक्का खा करके, खा करके, खा कर–करके, पैसा बरबाद करके कौड़ी जैसे बन गए हो और तमोप्रधान बन गए हो। अभी यहाँ आया हुआ हूँ, तो कितना खर्चा अभी लगेगा बाप से मिलने के लिए, बताओ। 10/20 रुपया, रेल का भाड़ा 50 रुपया। कोई को 10 रुपया, कोई को 20 रुपया, कोई को 50 रुपया। तो भी जिसके पिछाड़ी यहाँ सारी वो कला–काया चट हो गई धक्का खाते, वो अभी आए हुए हैं, तो उनके पास, जब निश्चय भी होता है कि बाबा आया हुआ है, वही जिसके लिए हम आधाकल्प धक्का खाया, तो 2 बरस भी नहीं आते हैं। निश्चय तो होकर जाते हैं ना– हम शिवबाबा के बच्चे हैं; परन्तु वो 6 महीने भी नहीं आते हैं, 12 महीने भी नहीं..., 2 बरस भी नहीं आते, 6,2,3,4 बरस में भी नहीं आते हैं। समझा! खर्चा कितना लगाया बाप के पास आने में? 10,20,50 रुपया और वहाँ भक्तिमार्ग में हज़ारों,लाखों,करोड़ों रुपया खर्च हो ही चुके हैं, बाप का पता भी नहीं और यहाँ आया हुआ है, तो देखो कितना सस्ता मिला हुआ है। बस! टिकट लेनी है (और) बाप मिलता है और उनसे जा करके वर्सा लेने का होता है; परन्तु उनके श्रीमत पर भी चलना है। अभी श्रीमत पर नहीं चल सकते हैं। कितना खर्चा किया, यहाँ सम्मुख बैठे हैं, पढ़ाते हैं, कोई खर्चे की बात नहीं है बिल्कुल ही। बिगर खर्चे मिला है। यहाँ आपे ही आ गया ना बच्चे। तो बिगर खर्चे आया हुआ है। बिगर खर्चे वो पढ़ाय रहे हैं। पढ़ाते हैं, तो भी बच्चों को इतना नहीं रहता है कि हम भगवान के स्टूडेन्ट हैं, हमको पढ़ना अच्छी तरह से चाहिए जैसे डायरेक्शन देते हैं। स्कूल में अटैण्ड करना है; क्योंकि नई–2 प्वॉइन्ट्स सुनाते रहते हैं। अगर 1,2,4 मुरली न सुनी, तो कितनी प्वॉइन्ट्स उसमें होंगी, कोई अच्छी–2 प्वॉइन्ट्स। तो वो भी परवाह नहीं करते हैं सुनने की, बहुत अच्छी–अच्छी। (म्युज़िक बजा)

मीठे–2 सिकीलधे सर्विसेबुल बच्चों प्रति बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट। (बच्चों ने कहा– गुडनाइट)